पैण्डोरा का पिटारा



पुर्नकथन व चित्रांकन: लिसल वील

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लोगों को इतनी परेशानियाँ आख़िर क्यों होती हैं?

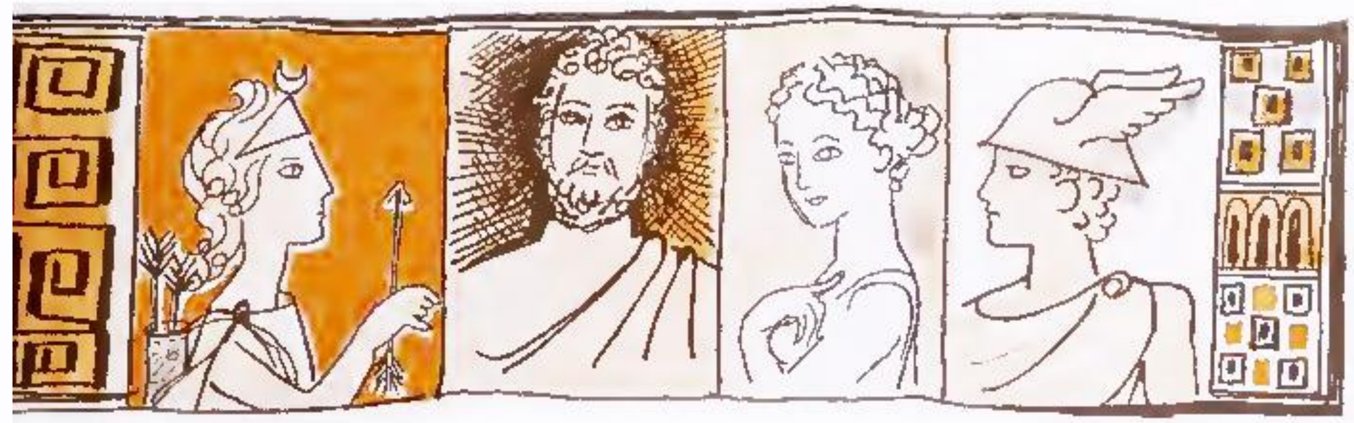
सूरज हर दिन क्यों नहीं चमकता?

हम सब इस बारे में सोचते हैं। हम सबने ऐसे ही सवाल पूछे हैं, और तब किसी न किसी तरह के जवाब तक भी पहुँचे हैं।

प्रचीन यूनानियों के लिए इन सवालों का जवाब पैण्डोरा की कहानी में है।

बहुत पुराने ज़माने में, यह कहानी बताती है, सब कुछ बहुत ही अच्छा-सुखद था। लोगों के पास वह सब था जिसकी ज़रूरत इन्सान को हमेशा खुश रहने के लिए पड़ती है। पर लोग इन रहमतों के लिए देवताओं का शुक्रिया अदा करना भूल चुके थे। इससे ज़ीयुस बेहद नाराज़ हो गए। उन्होंने तय किया कि वे कुछ ऐसा करेंगे जिससे लोग देवताओं की रहमतों को याद रखें। नतीजा था पैण्डोरा, जो एक सुन्दर युवती थी। देवताओं ने उसे रचा और धरती पर भेजा। पैण्डोरा को इस हिदायत के साथ एक पिटारा दिया गया कि वह पिटारे को कतई न खोले।

पर ऐसे पिटारे को खोलने से खुद को भला कौन रोक सकता है, जो देवताओं के अनोखे उपहार-सा दिखता हो? यह कहानी पैण्डोरा, उसके पिटारे और पिटारे में जो कुछ था, उसके बारे में है, क्योंकि पिटारे को न खोलने की हिदायत के बावजूद खोल जो लिया गया था।



पैण्डोरा का पिटारा





पुर्नकथन व चित्रांकन: लिसल वील

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

पैण्डोरा का पिटारा

जब मैं छोटी थी मुझे यह समझ ही नहीं आता था कि दुनिया में आख़िर बुरी चीज़ें क्यों घटती हैं।

सब कुछ, सबके लिए, हमेशा, बहुत अच्छा क्यों नहीं रहता?

सूरज हर दिन चमकता क्यों नहीं?

क्यों...?

ज़ाहिर है प्रचीन यूनानी भी इन और तमाम दूसरी चीज़ों के बारे में सोचते होंगे। और सोचने के बाद उन्होंने तय किया कि इन सवालों के जवाब ऐसी कहानियों में हैं, जिन्हें मिथक कहा जाता है। ये मिथक देवताओं, शूरवीर नायकों और कभी-कभार बिलकुल साधारण इन्सानों के बारे में हैं।



प्राचीन यूनान के लोग मानते थे कि अनेक देवी-देवता होते हैं। और उनका आचरण-व्यवहार बिलकुल इंसानों-सा ही होता है, सिवा इसके कि वे इंसानों से कहीं अधिक शक्तिवान होते हैं। वे अनेक किस्म के जादूई करिश्मे भी कर सकते हैं। जिन मिथकों में देवी-देवताओं का बखान किया गया, वे हमें बताते हैं कि दुनिया वैसी कैसे और क्यों बनी, जैसी अब वह है। इन मिथकों में एक पैण्डोरा नामक युवती का है, जिसके पास एक रहस्यमय पिटारा था। इस मिथक में मुझे मेरे सवालों के जवाब भी मिले।

प्राचीन देवताओं के ज़माने में यूनान का प्रदेश एक अद्‌भुत जगह थी। वहाँ फूल भी बोल सकते थे और हर ओर जादूई पशुओं का वास था।



उस ज़माने में लोग हरी-भरी वादियों में रहा करते थे जहाँ तरह-तरह के फल, अन्न, पेड़-पौधे, सहज ही उगते थे। ओलम्पस पर्वत पर छाए बादलों के ऊपर देवताओं का निवास था। वहाँ उनके आलीशान महल थे, जहाँ से उन्हें दुनिया का बेहतरीन नज़ारा दिखाई देता था।







पर देवता हमेशा अपने महलों में नहीं रहते थे। उन्हें नीचे धरती पर उतर वादियों में बसे लोगों के साथ मिलना-जुलना पसन्द था। कभी वे खुद की तरह आते, तो कभी भेष बदल कर। लोगों को कभी पक्का पता नहीं रहता कि अजीबोग़रीब दिखने वाले जानवर सचमें पशु ही हैं या फिर कोई देवता! ज़ीयुस तक, जो सबसे बड़ा देवता था, किसी पशु का रूप धर कर आता और लोगों को कोई चाल छल, छकाता!

इन्सानों और देवताओं के लिए यह समय बड़ा ही सुखद था। देवता धरती पर उतर देखते कि हर दिन उत्सव का सा दिन है। किसीको किसी तरह की परेशानी या तकलीफ़ न थी। लोग गाते-बजाते, नाचते रहते थे।

खाने को लज़ीज़ पकवान हुआ करते। हर मेज़ पर मीठा सोमरस और मधु होता ताकि लोग उसका मज़ा ले सकें। और यह हालात तब तक बने रहे जब तक...





ज़ीयुस नाराज़ न हो गया।

दरअसल वादियों में रहने वाले लोग यह सोचना ही भूल चुके थे कि वे कितने खुशकिस्मत हैं। वे तो यह माने बैठे थे कि उनकी यह खुशहाली हमेशा-हमेशा बनी रहेगी। कोई भी पल भर रुक कर देवताओं को उनकी रहमतों का शुक्रिया अदा करने की बात सोचता तक न था। कोई देवताओं का रत्ती भर आभार नहीं जताता था।

सो ज़ीयुस ने तय किया कि कुछ बदलाव लाने का वक़्त आ चुका है। उन्होंने अपने महल के सभागार में सभी देवताओं को बुला भेजा।

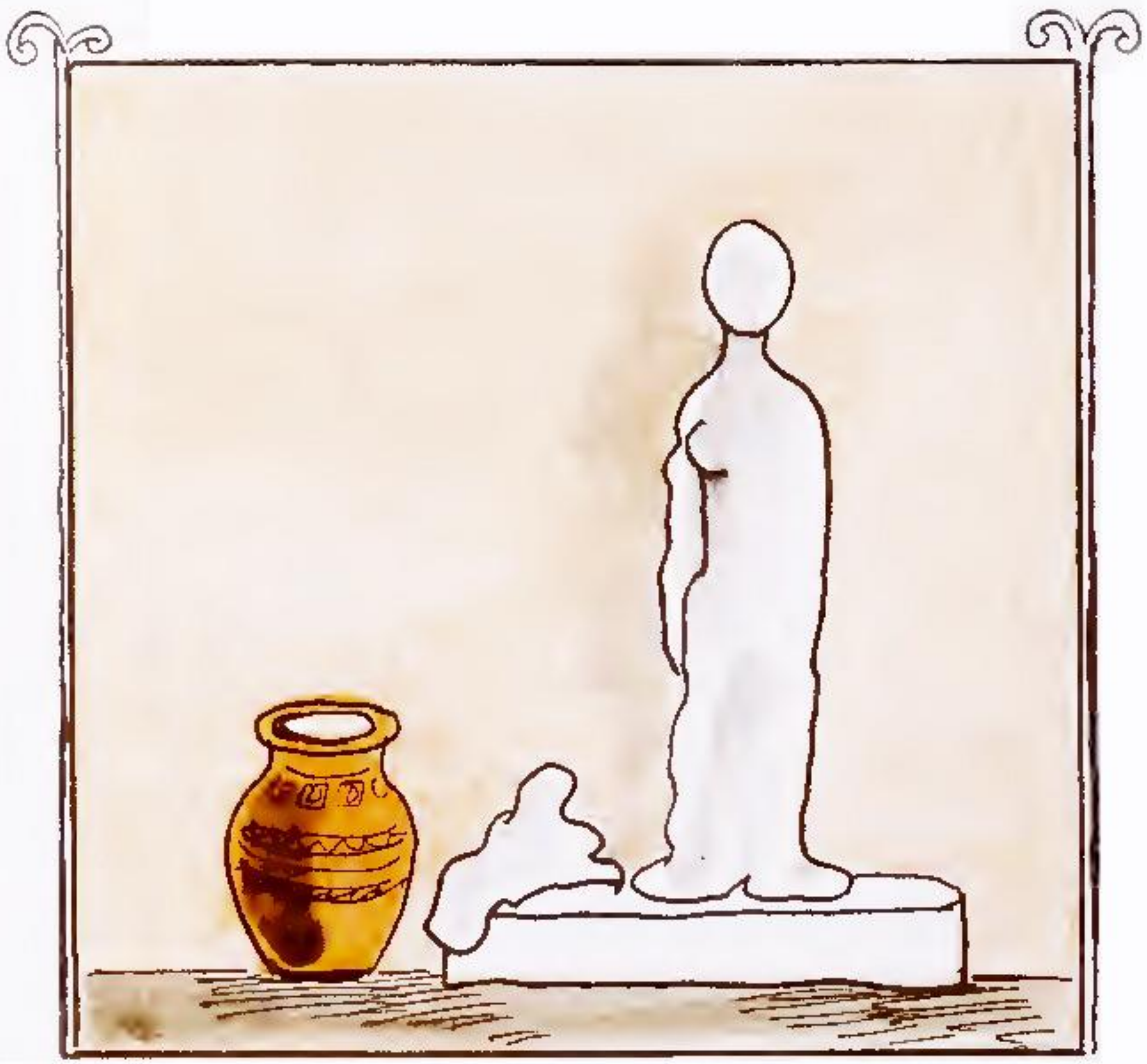




एक के बाद एक देवता पहुँचने लगे, जब तक सब जमा न हो गए। तब ज़ीयुस ने अपनी बात रखी। देवता उनसे सहमत हुए। सबने माना कि लोगों को सचमें पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। लोगों को यह समझना चाहिए कि उनके जीवन में जितनी भी अच्छी चीज़ें हैं, वे सब दरअसल देवताओं की कृपा से ही हैं। अब सवाल यह था कि यह संदेशा इन्सानों तक कैसे भेजा जाए ताकि उन्हें अपनी गलती का अहसास हो?



देवताओं ने सोचा और अंत मे क्या करना है इस बारे में निर्णय लिया।



सबसे पहले देवी-देवताओं ने मिट्टी और पानी से एक लड़की की मूरत बनाई। जब वह तैयार हो गई तो उसमें प्राण फूँके। तब सभी देवी-देवताओं ने उसे एक-एक खास भेंट दी। प्रेम की देवी एफ्रोडाइटी ने उसे सौन्दर्य दिया। व्यापार के देवता हरमीस ने उसे बोलने और तर्क करने की शक्ति दी। कला के देवता अपोलो ने उसे संगीत प्रेम दिया। और ज़ीयुस की तीन बेटियों (ग्रेसेस्) ने उसे लावण्य, आनन्द और उत्साह दिया। ज़ीयुस ने उसे जिज्ञासा दी। देवी-देवताओं ने उस युवती का नाम पैण्डोरा रखा।



जब वह नई-नवेली युवती देवताओं के सामने आ खड़ी हुई, ज़ीयुस ने उसे एक बेहद सुन्दर सुनहरा पिटारा थमाया। पिटारा अच्छी तरह से बन्द था। ज़ीयुस ने पैण्डोरा से कहा कि उसे पिटारा खुद कतई नहीं खोलना है। बल्की उस पुरुष को दे देना है जिससे वह विवाह करे।



अब तैयारी पूरी हो चुकी थी। रूपवती और खोट-रहित पैण्डोरा को वादियों में रहने वालों के पास धरती पर भेज दिया गया। सुनहरे पिटारे से लैस पैण्डोरा इतनी मोहक और दोस्ताना थी कि वह जिससे भी मिली, उसने उसे पसन्द किया। ख़ास तौर से एपिथीमियस ने, जो उसे जल्दी ही अपनी पत्नी बनाने अपने घर ले गया।





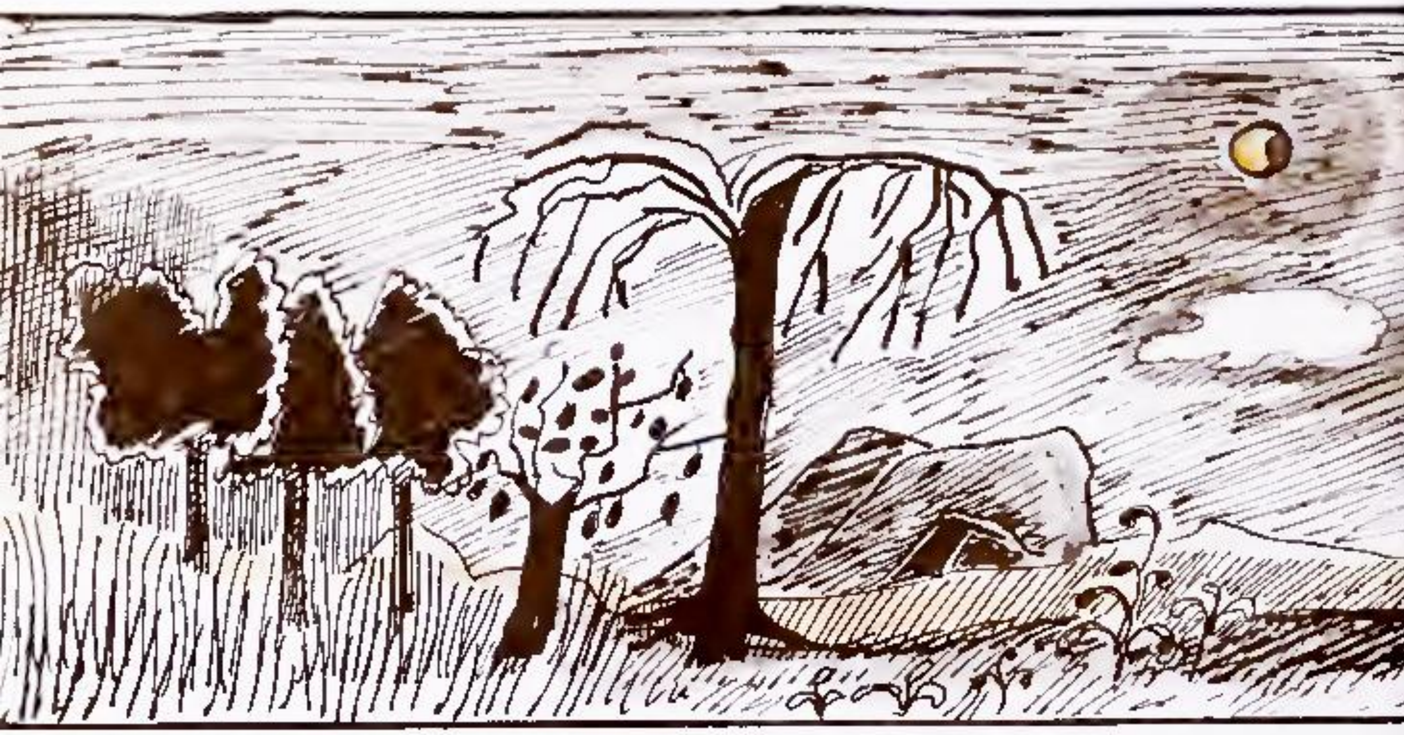


ज़ाहिर सी बात है कि एपिथीमियस के मन में भी पिटारे के बारे में कौतुहल जगा। पैण्डोरा ने बताया कि खुद ज़ीयुस ने उसे वह पिटारा दिया था, यह भी कहा था कि पिटारे को खोलना नहीं है, अपने पति को देना है। पैण्डोरा ने यह भी बताया कि अन्दर क्या है उसे पता नहीं है।

एपिथीमियस ने पिटारा ले तो लिया, पर उसे खोला नहीं। ज़ीयुस बेशक कृपालु हो सकता था, पर यह तो सब जानते ही थे कि उसे लोगों को छकाना पसन्द था। क्या यह पिटारा भी उसकी कोई चाल थी?

क्योंकि एपिथीमियस को यह समझ ही न आया कि उसे क्या करना चाहिए, उसने तय किया कि वह इस मसले पर अपने भाई से सलाह लेने जाएगा। वह फ़ौरन निकल पड़ा। पर निकलने के पहले उसने भी पैण्डोरा को हिदायत दी कि वह पिटारे को हाथ न लगाए। उसे खोलने का ख़याल तक दिमाग़ में न लाए।





एपिथीमियस को अपने भाई के पास पहुँचने में दो दिन और दो रातें लगीं। पर जब भाई ने एपिथीमियस की बात सुनी तो वह उससे भी ज़्यादा डर गया। वह बोला किसीको भी पिटारे मे झांक कर तक नहीं देखना चाहिए। उसकी सलाह यह थी कि एपिथीमियस तुरन्त घर लौटे और पिटारे को किसी ऐसी जगह छुपा दे जहाँ वह किसीके हाथ ही न लगे। तब वह कभी खुलेगा ही नहीं।



एपिथीमियस ने भाई की सलाह मानी और
जितनी जल्दी हो सकता था घर के लिए लौट पड़ा।



इस बीच पैण्डोरा अपने नए घर को व्यवस्थित करने में जुट गई। उसने साफ़-सफ़ाई की, चीज़ों की मरम्मत की, घर की सजावट की। कमरे को और सुन्दर बनाने वह बाहर से फूल लाई। एपिथीमियस की वापसी पर उसे पिलाने मीठा शहद लाई।

वह एपिथीमियस की राह देखते बार-बार दरवाज़े तक जाती, पर एपिथीमियस उसे लौटता नज़र ही नहीं आता।

जल्द ही उसे व्यस्त रखने को कुछ बचा ही नहीं। उसके पास अब सुनहरे पिटारे को घूरने के सिवा करने को कोई काम न था।

क्या होगा भला उसमें?

कुछ घंटे बीते, अब उससे और सब्र नहीं हो रहा था। उसकी जिज्ञासा उस पर हावी हो गई।





देवताओं ने उसे कैसे-कैसे अनूठे तोहफ़े दिए थे, पैण्डोरा ने सोचा। इस पिटारे में भी कोई उम्दा भेंट होगी। ज़रा झांक कर देखने में भला क्या हर्ज है?

उसने पिटारे के ढक्कन को ज़रा-सा ऊपर उठाया। पर उसे कुछ नज़र ही न आया। तब उसने ढक्कन को कुछ और खोला। अन्दर से हल्की भिनभिनाहट सुनाई दी।

अब बेसब्र पैण्डोरा ने ढक्कन पूरा ही खोल दिया। फिर क्या था, पिटारे में से एक घना काला बादल बाहर निकला।









जब बादल परों वाले भयानक जन्तुओं में बदल गया तो पैण्डोरा चीख पड़ी, ''ओह!'' ये जन्तु उसके सिर और तब शरीर के गिर्द भिनभिनाते मंडराए। जिसके बाद पूरे घर में फैल गए और तब दरवाज़े से बाहर निकल गए।

पैण्डोरा ने घबरा कर ढ़क्कन बन्द कर दिया, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। पिटारा खाली हो चुका था, सिवा उसके तले में किसी चमकदार चीज़ के। पर पैण्डोरा को अब कुछ और देखना नहीं था। अगर वह भी कुछ बुरा ही था, तो उसे वह अन्दर ही रहने देना चाहती थी। और अगर वह अच्छा था, तो वह उसे एपिथीमियस के लिए बचा रखना चाहती थी।



इधर एपिथीमियस तेज़ी से घर लौटने की कोशिश कर रहा था। पर उसे रास्ते में जो दिख रहा था, उसने पहले कभी देखा ही न था। लोग अजीब-सी हरकतें कर रहे थे।

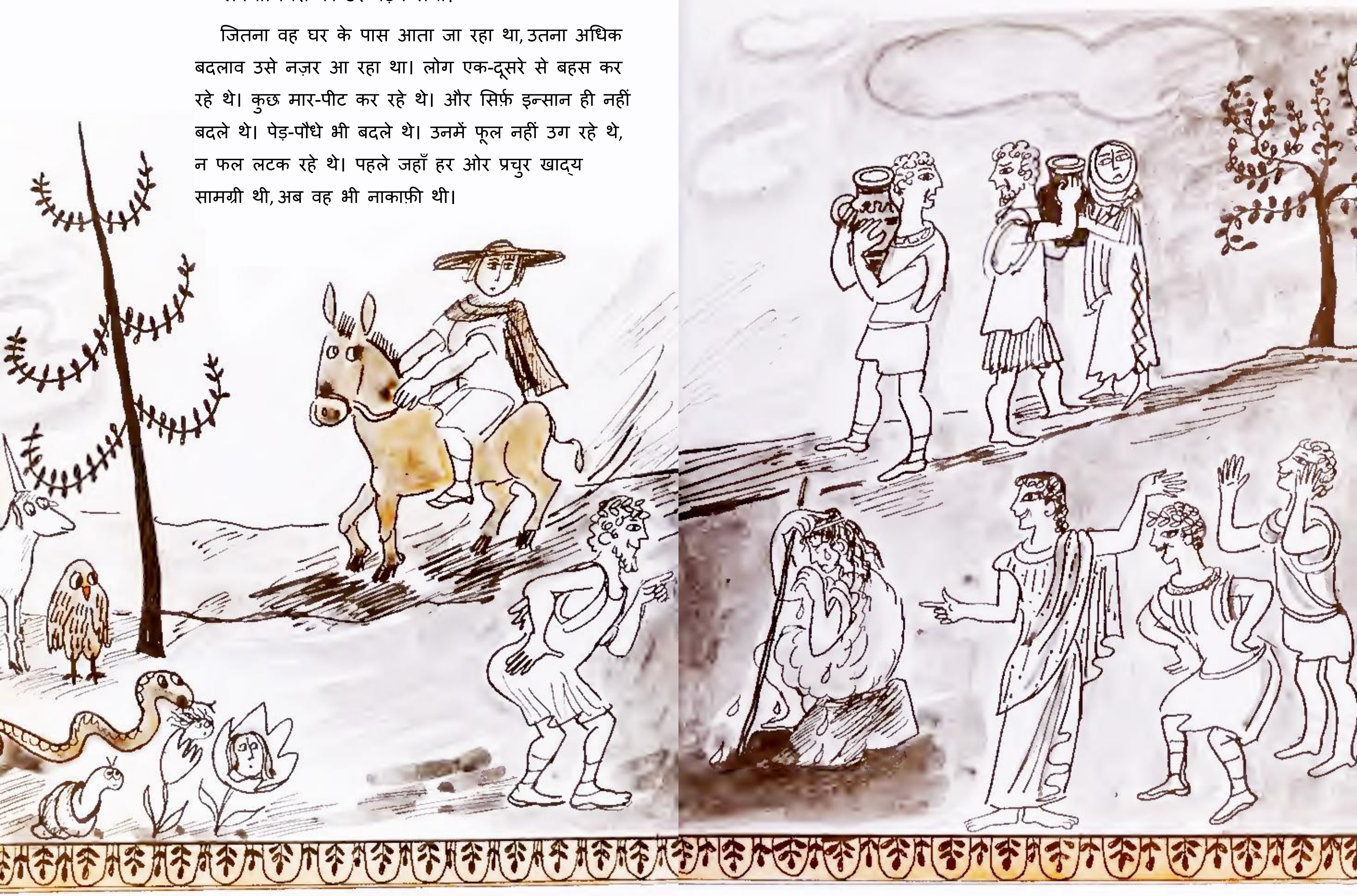
वे साथ मिल कर नाचने-गाने के बजाए लड़-झगड़ रहे थे। मिल-बांट कर खाने के बजाए, कुछ के पास ज़रूरत से ज़्यादा खाना था, तो दूसरों के पास बहुत कम।



आख़िर दुनिया इस कदर बदल क्यों गई थी?

एपिथीमियस का डर बढ़ने लगा।

जितना वह घर के पास आता जा रहा था, उतना अधिक बदलाव उसे नज़र आ रहा था। लोग एक-दूसरे से बहस कर रहे थे। कुछ मार-पीट कर रहे थे। और सिर्फ़ इन्सान ही नहीं बदले थे। पेड़-पौधे भी बदले थे। उनमें फूल नहीं उग रहे थे, न फल लटक रहे थे। पहले जहाँ हर ओर प्रचुर खाद्य सामग्री थी, अब वह भी नाकाफ़ी थी।





घबराया और हैरान एपिथीमियस अपने घर पहुँचा। उसने पैण्डोरा को दुखी मन से अन्दर बैठा पाया। पैण्डोरा ने लुढ़कते आँसुओं और सिसकियों के बीच उसे वह सब बताया जो घटा था।

एपिथीमियस को जो हुआ वह ठीक नहीं लगा। पर वह जानता था कि हुए को अनहुआ तो किया नहीं जा सकता था।

"यह ज़ीयुस की कारस्तानी है," वह बोला। "उसने ही यह कहर ढ़ाया है। पर इसका कोई तो कारण होगा। हो सकता है कि हमारे पास भोगने को इतनी सारी अच्छी चीज़ें थीं, पर हमने पल भर भी रुक कर यह न सोचा कि वे हमें मिलीं कैसे। लगता है कि अब हमें दुख-तकलीफ़ों से भरी दुनिया में ही जीना होगा। ग़लती तुम्हारी नहीं है पैण्डोरा, ज़ीयुस यही चाहते थे।"

"अगर हालात ऐसे ही बने रहने हैं, तो कुछ और भी बता दूँ," पैण्डोरा ने कहा। "पिटारे के तले में कुछ चमकीला-सा है। शायद तुम्हें उसे देख लेना चाहिए।"

दोनों ने साथ मिल पिटारे को खोला। खोलते ही उसमें से एक खूबसूरत फूल उठ आया। उसकी पंखुड़ियाँ खुलीं और एक मीठी सुगंध कमरे में पसर गई।

"हमारे लिए अब भी उम्मीद बाकी है," एपिथीमियस ने कहा। "ख़राब के साथ कुछ अच्छा भी आया है। ज़रूर ज़ीयुस कह रहे हैं कि बुरा आए, तो अच्छा भी आएगा।" कुछ पल सोचने के बाद उसने जोड़ा, "शायद यह हमें अच्छे के लिए ज़्यादा शुक्रगुज़ार भी बनाए।





तब से हमारी दुनिया ऐसी ही बनी हुई है। बुरा अनुभव हमें यह जानने में मदद करता है कि अच्छा क्या है। कड़वे का स्वाद हमें मीठे का आनन्द लेने देता है। उदास अंधेरे दिन, धूपदार दिनों को और खुशनुमा बनाते हैं। और इन कठिन दौरों के बीच भी उम्मीद तो होती ही है। इसलिए जब बुरा घटता है हम अच्छे की उम्मीद करते हैं। हम यह भी जानते हैं कि बुरा हमेशा नहीं रहेगा।

लिसल वील का जन्म वियाना, ऑस्ट्रिया में हुआ था, जहाँ उन्होंने चित्रकारी, नृत्य और संगीत के हुनर विकसित किए। अमरीका आने के बाद उन्होंने 90 से अधिक बाल-पुस्तकों के लिए चित्र बनाए, जिनमें आधे से अधिक खुद ही लिखीं भी।

पिछले बीस वर्षों से वे हर गर्मियों में वे लिटिल ऑर्केस्ट्रा सोसायटी के साथ बच्चों और किशोरों के लिए गीत-कथाओं का प्रदर्शन करती रही हैं। इनमें प्रोकोफिएव की *सिंड्रेला,* स्ट्रॉविन्सकी की *पेत्रुश्का* व मैण्डलसनस् की *मिड समर नाइटस् ड्रीम* शामिल हैं। वे अनेक प्रमुख वाद्यवृन्दों के साथ राष्ट्रीय टेलिविज़न और फिल्मों में आ चुकी हैं। उनकी कुछ हालिया क़िताबें हैं - *गर्ल एण्ड द फ्लैटरिंग फॉक्स, एस्पर, द स्टोरी ऑफ द वाइनमैन एण्ड द चाइल्ड, आई क्रिस्टोफर कोलम्बस, आवर वर्ल्ड टु यू विद लव, टू सेल अ शिप ऑफ ट्रैज़र,* और *द हाउसेस् वी बिल्ड* ।